जो कोई न कर सके

गिजुभाई

जो कोई न कर सके

गिजुभाई
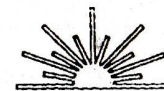
अरुणोदय प्रकाशन

अरुणोदय प्रकाशन
4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

संस्करण : 2012
ISBN : 81-88473-30-8
मूल्य : ₹30
मेहरा ऑफसेट, नयी दिल्ली-110 002 में मुद्रित

Jo Koi Na Kar Sake by Gijubhai

जो कोई न कर सके

बादशाह ने कहा : "बीरबल, जिसे कोई न कर सके, ऐसा काम कौन कर सकता है?"

बीरबल ने कहा : "साहब, छोटे बच्चे।"

बादशाह बोला : "अच्छी डींग मार दी।"

बीरबल ने कहा : "देख लीजिएगा किसी दिन।"

बादशाह बोला : "ठीक है, देखेंगे।"

बादशाह तो कुछ समय के बाद यह बात भूल गया पर बीरबल नहीं भूला।

वह एक दिन गली में गया। जा कर बोला : "ओ बच्चो, इधर आओ।"

तुरन्त बच्चों की एक टोली आ कर खड़ी हो गई।

"अरे बच्चो, मेरा एक काम कर दोगे?"

"हाँ-हाँ बताइए, कर देंगे।"

"यह गढ़ देखते हो न? इसकी बगल में मिट्टी का

एक बड़ा ढेर लगा दो, जाओ। जो एक तसली डालेगा उसे एक पाई मिलेगी, और जो दो डालेगा उसे दो

पाइयाँ मिलेंगी।"

बच्चों की जात। एक आया, दूसरा आया, तीसरा आया, चौथा आया...ऐसे सारी गली के बच्चे इकट्ठे हो गये। फिर तो वे सब तसली-तसली ला कर लग गये मिट्टी डालने को। फिर दूसरी गली के बच्चे भी आए, फिर तीसरी गली के आए और ऐसे सारे गाँव के बच्चे आ गए।

बीरबल एक-एक पाई देता जाता और कहता जाता : "हम्बो मेरे बच्चो, हम्बो मेरे बच्चो, बढ़े चलो।"

बच्चे यानी कि चमत्कार, कुछ ही क्षणों में एक बड़ा ढेर हो गया। और फिर दो पल और बीतने को आए कि वह ढेर गढ़ के कँगूरे को छूने लगा।

बीरबल ने कहा : "अब तुम इसे रौंद कर बना दो जैसे रास्ता।"

बच्चे तो चाहते भी थे यही। वे सब लग गये रौंदने में। पल-भर में रास्ता बन गया। गली से ले कर गढ़ के ऊपर तक पहुँचने का रास्ता।

बीरबल ने कहा : "अब बस करो।"

फिर बीरबल ने हथसाल में से एक हाथी को मँगवाया और महावत से कहाः "इस रास्ते पर से हाथी को गढ़

पर चढ़ा दो।"

रास्ता तो अच्छा-भला था, इसलिए हाथी गढ़ पर चढ़ गया। गढ़ पर हाथी दूर से ही दिखने लगा। दूर-दूर से लोग उसे देखने लगे।

बीरबल ने कहा : "बच्चे लोग, अब इस मिट्टी के ढेर को तितर-बितर कर दो। पूरी मिट्टी को गली में बिखेर दो। जैसा पहले था, वैसा ही बना दो। एक-एक तसली के लिए एक-एक पाई।"

सब बच्चे दौड़ पड़े। पाई लेते जाते और तसली भर-भर मिट्टी फेंकते जाते। बच्चे लग जाएँ तो देरी किस बात की!

घड़ी-दो-घड़ी में जैसा था, वैसा ही हो गया। जैसे मिट्टी का ढेर था ही नहीं। किसी को मालूम ही नहीं होता था कि हाथी गढ़ पर चढ़ा कैसे!

बीरबल ने कहा : "बच्चे लोग। अब तुम सब अपने-अपने घर चले जाओ। जब मैं बुलाऊँ तब सब आ जाना।"

सब बच्चे चले गए। फिर बीरबल ने बादशाह को बुलाया। गढ़ पर हाथी को देख कर बादशाह ने दाँतों तले अँगुली दबा ली।

बादशाह ने पूछा : "बीरबल! यह हाथी गढ़ पर कैसे चढ़ गया?"

बीरबल ने कहा : "सा'ब, छोटे बच्चों ने चढ़ाया है।"

बादशाह ने पूछा : "यह कैसे?"

तब बीरबल ने पूरी बात बता दी। बादशाह ख़ुश हो गया। फिर खाया, पिया और राज किया।

"परन्तु हाथी नीचे उतरा या नहीं?

"उतरा था न!"

"कैसे?"

एक बार फिर बीरबल ने सब बच्चों को बुलाया और मिट्टी का ढेर लगवाया और हाथी को नीचे उतारा।

•••••

खड़बड़-खड़बड़ खोदत है

एक था ब्राह्मण। वह बहुत ही गरीब था। एक बार उसकी पत्नी ने कहाः "अब तुम कुछ काम-धन्धा करो तो अच्छा है। कभी-कभी तो बाल-बच्चे भूखे-प्यासे ही रह जाते हैं।"

ब्राह्मण ने कहा : "परन्तु मैं क्या करूँ? मुझे तो कोई काम-काज आता ही नहीं। क्यों न तुम मुझे कुछ सिखा दो?"

ब्राह्मणी पढ़ी हुई और बुद्धिमान थी। उसने कहा : "मैं तुम्हें एक श्लोक सिखाती हूँ। कण्ठस्थ कर लो। फिर जा कर किसी राजा को यह श्लोक सुनाना। श्लोक सुन कर राजा तुम्हें कुछ-न-कुछ धन जरूर देगा, पर इसे भूल मत जाना।"

फिर ब्राह्मणी ने ब्राह्मण को एक श्लोक कण्ठस्थ करा दिया। ब्राह्मण उसे रटता हुआ परदेश को चला।

रास्ते में एक नदी आई। वहाँ ब्राह्मण स्नानादि करने और भात खाने के लिए रुक गया। स्नानादि की क्रिया में श्लोक भूल गया। बहुत याद किया परन्तु उसे श्लोक का एक शब्द भी याद नहीं आया।

उसी समय उसने एक बत्तख को नदी किनारे पर मिट्टी खोदते हुए देखा। श्लोक का स्मरण करते हुए

उसने बत्तख को देखा था, अतः उसके मन में एक नई पंक्ति का स्फुरण हुआ। बोला :

खड़बड़-खड़बड़ खोदत है

ब्राह्मण ऊँची आवाज में यह पंक्ति बोल रहा था, इसलिए उसकी आवाज सुन कर बत्तख अपनी गरदन ऊँची उठा कर देखने लगी। यह देख ब्राह्मण के दिमाग में दूसरी पंक्ति स्फुरित हुई। बोला :

लम्बी गरदन से देखत है

ब्राह्मण की दूसरी बार की यह आवाज सुन बत्तख डर गयी और चुपचाप दुबक कर बैठ गयी। यह दृश्य देख ब्राह्मण के दिमाग में तीसरी पंक्ति कौंधी। वह बोलाः

उकड़ूँ-मुकड़ूँ बैठत है

ब्राह्मण की यह आवाज़ सुन बत्तख जल्दी-जल्दी चलती हुई पानी में चली गयी। यह देख कर ब्राह्मण के दिमाग में चौथी पंक्ति आई। वह बोला :

धड़बड़-धड़बड़ दौड़त है

अब ब्राह्मण अपना पहला श्लोक तो भूल गया था, परन्तु उसे दूसरा श्लोक मिल गया। वह यही श्लोक

रटते-रटते आगे बढ़ने लगा, मानो उसकी पत्नी नें उसे यही श्लोक सिखया था :

खड़बड़-खड़बड़ खोदत है,
लम्बी गरदन से देखत है,
उकड़ूँ-मुकड़ूँ बैठत है,
धड़बड़-धड़बड़ दौड़त है।

चलते-चलते एक शहर आया। वह उस शहर के राजा के दरबार में गया और सभा के बीच जा कर बोला :

खड़बड़-खड़बड़ खोदत है,
लम्बी गरदन से देखत है,
उकड़ूँ-मुकड़ूँ बैठत है,
धड़बड़-धड़बड़ दौड़त है।

राजा ने यह अजीबोगरीब श्लोक लिख लिया। दरबार में कोई इस श्लोक का अर्थ नहीं बता सका। तब राजा ने ब्राह्मण से कहा : "महाराज! दो-चार दिनों के बाद आप फिर से दरबार में आइए। फिलहाल राजकीय भोजन खा कर आनन्द से रहिए। आपके श्लोक का उत्तर हम बाद में देंगे।"

राजा ने ब्राह्मण का श्लोक अपने सोने के कमरे में लिखवा दिया। फिर क्या हुआ कि राजा हर रोज रात के बारह बजे उठता और एकान्त में आराम से श्लोक पढ़ता और उसका अर्थ सोचता।

एक रात को चार चोर राजा के महल में चोरी करने का इरादा कर घर से निकले। वे राजा के महल के पास जा कर खोदने लगे। ठीक रात के बारह बजे थे और उसी समय राजा श्लोक की पहली पंक्ति का अर्थ सोच रहा था। चोर दीवार खोद रहे थे। तभी राजा के बोल उनके कानों में पड़ेः

खड़बड़-खड़बड़ खोदत है

चोरों ने मन में सोचा कि राजा जाग रहा है और खुदाई की आवाज सुन रहा है, इसलिए चोरों में से एक चोर महल की खिड़की पर चढ़ा और अपनी गरदन लम्बी करके कमरे में देखने लगा कि राजा जाग रहा है कि नहीं। उसी समय राजा ने दूसरी पंक्ति का उच्चारण किया :

लम्बी गरदन से देखत है

यह सुनते ही खिड़की वाला चोर समझ गया कि

राजा जाग रहा है और मुझे झाँकते हुए भी उसने देख लिया है। वह शीघ्र ही नीचे उतर गया और दूसरों को भी चुपचाप दुबक कर बैठ जाने का इशारा किया। सब चुपचाप दुबक कर बैठ गए। उसी समय राजा ने तीसरी पंक्ति का उच्चारण किया :

उकड़ूँ-मुकड़ूँ बैठत है

चोरों ने सोचा कि अब तो भाग चलना चाहिए। राजा को यह सब मालूम हो गया है और हम सबको देख भी लिया है। अब हम अवश्य पकड़े जाएँगे और मारे भी जाएँगे। वे सब डर के मारे एक साथ दौड़ पड़े। उसी समय राजा ने चौथी पंक्ति का उच्चारण किया :

धड़बड़-धड़बड़ दौड़त है

ये चोर और कोई नहीं, राजा के दरबान थे। वे ही राजा के चौकीदार थे। उनकी नीयत बिगड़ गई थी इसलिए उन्होंने चोरी का इरादा किया था। चोर भाग कर अपने-अपने घर पहुँच गए परन्तु अगले दिन दरबार लगा तो वे राजा की सलामी करने के लिए न गए। वे समझ रहे थे कि अवश्य राजा जी सब कुछ

जान गये हैं और हमें पहचान लिया गया है।

राजा ने देखा कि सलामी के लिए दरबान नहीं आये हैं, तब पूछा : "आज दरबान लोग सलामी के लिए क्यों नहीं आए हैं? उनके घरों में सब कुशल तो है न?"

राजा ने दूसरे सिपाहियों को भेज कर दरबानों को बुलवाया। दरबार में दरबान आए और सलामी भर कर खड़े हो गए।

राजा ने पूछा : "बोले, आज तुम लोग कचहरी में क्यों नहीं आए थे?"

सब दरबान काँपने लगे। राजा को सब मालूम हो गया है, यही वे समझ रहे थे। फिर अब और झूठ बोलेंगे तो मर जायेंगे, ऐसा मान कर उन्होंने रात में जो घटना घटी थी, सब बता दी।

यह सब सुन कर राजा को विस्मय हुआ। फिर उसने सोचा कि यह तो ब्राह्मण के श्लोक का ही प्रताप है। श्लोक तो भारी चमत्कारी है! ब्राह्मण के पद पर राजा खुश होकर झूम उठा। उसने ब्राह्मण को बुलाया और बड़ा इनाम दे कर विदा किया।

ब्राह्मण को बड़ा भारी सिरोपाव मिला था, इसलिए

श्लोक का अर्थ कराने की अब कोई जरूरत रही न थी। वह और कुछ सोचे-समझे बिना अपने घर पहुँच गया। फिर खाया, पिया और मौज की।

•••••

सा'ब, बच्चों को सँभाल रहा था

बादशाह और बीरबल बैठे हुए थे।

बादशाह ने कहा : "बीरबल, आज तुम कचहरी में देरी से क्यों आए?"

बीरबल ने कहा : "साहब, क्या करूँ? बच्चों की देखभाल कर रहा था।"

बादशाह ने कहा : "परन्तु इसमें इतनी देरी होने का क्या कारण है?"

बीरबल ने कहा : "साहब, बच्चों की देखभाल करना बहुत मुश्किल काम है।"

बादशाह ने कहा : "अरे! बच्चों की देखभाल करने में कौन बड़ी बात है? उन्हें पाई-पैसा दे दो, सेव-मुरमुरा खिला दो, उनका रोना-धोना बन्द!"

बीरबल ने कहा : "साहब! अनुभव कर लीजिएगा, फिर मालूम हो जाएगा।"

बादशाह ने कहा : "ऐसी बेपेंदी की बात में अनुभव करने का क्या है?"

बीरबल ने कहा : "तो लीजिए, मैं आपका बेटा बनता हूँ, आप मेरी देखभाल कीजिएगा।"

बादशाह ने कहा : "ठीक है। चलो, मैं बाप बनता हूँ और तुम मेरे बेटे बन जाओ।"

बीरबल ने शुरू किया : "अें-अें-अें! पिताजी, मुझे दूध पीना है।"

बादशाह ने कहा : "सुनो, दूध लाओ।"

दूध आया। बीरबल ने पिया।

"अें-अें-अें!... पिताजी, मुझे कंधों पर बैठना है।"

"अरे! क्या बादशाह के कंधों पर बैठा जाता है?

"क्यों नहीं? बादशाह का बेटा जो हूँ!"

बादशाह ने बीरबल को कंधों पर बिठाया और फिर नीचे उतारा।

"अें-अें-अें! पिताजी, मुझे गन्ना खाना है!"

बादशाह ने गन्ना मँगवाया।

"अें-अें-अें! पिताजी, इसके टुकड़े कर दीजिए।"

बादशाह ने टुकड़े कर दिए।

"अें-अें-अें! नहीं पिताजी, टुकड़ों को पूरा गन्ना बना दीजिए।"

"अरे सुन! टुकड़ों से पूरा गन्ना कैसे बन सकता है?"

बीरबल रोने लगा : "अें-अें-अें...! टुकड़े नहीं चाहिए, मुझे पूरा गन्ना चाहिए।...अें-अें-अें...!"

"चल-चल! चुपचाप गन्ना खा"

"नहीं पिताजी! हमारा गन्ना लाओ!"

"अरे कोई सुनो, एक और गन्ना लाओ!"

"नहीं-नहीं! इन्हीं टुकड़ों का पूरा गन्ना बना दो,

पिताजी! दूसरा नहीं चाहिए!"

बादशाह ने कहा : "नादानी मत करो!"

बीरबल ने कहा : "नहीं-नहीं-नहीं! हमारे इन्हीं टुकड़ों का गन्ना बना कर दो! अें-अें-अें!"

बादशाह ने कहा : "यह माथा-पच्ची कौन करेगा? अरे है कोई? इस लड़के को बाहर ले जाओ।"

बीरबल हँसने लगा।

बादशाह ने कहा : "बीरबल तुम सच कहते हो, बच्चों को सँभालना मुश्किल तो है!"

•••••